

69, 3. परिपूत *vollkommen gereinigt*, — *rein*: धान्य M. 8, 330. 331. जल PAKĀT. 188, 12. मखशतपरिपूतं गोत्रम् MBh. 159, 2. — Vgl. परिपवन.

— वि *vollständig läutern*, — *reinigen*: सत्येन विपुनोहि माम् (अग्ने) MBh. 2, 1150. in der Stelle: पविः शल्यो भवति यदिपुनाति कायम् Nir. 12, 30 nach DURGA = विदारयति.

— सम् *läutern, reinigen u. s. w.*: श्रुतस्य नाभावधि सं पुनामि RV. 10, 13, 3. पवनेन संपू ऀ. G. 4, 5. — *caus. dass.*: सोमं पवित्रेण संपावयति ÇAT. Br. 1, 7, 1, 13. 15.

— अभिसम् *hinwehen über* (acc.) TBa. 2, 3, 9, 1. दिशः 4.

2. पू (= 1. पू) adj. *läuternd, reinigend*: पुवै, पुवः P. 6, 4, 77, Sch. — Vgl. श्रुतं, उदं, केतं, खलं, धृतं, मधुं, वातं, सुं.

3. पू (von 1. पा) adj. *trinkend in अग्ने*.

पूम् UNĀDIS. 1, 123. पूम् P. 6, 2, 46, Sch. m. SIDDH. K. 250, a, 3. 1) m. *Vein, Körperschaft, Menge, Schaar* AK. 3, 4, 2, 21. H. an. 2, 36. MED. g. 10. HALĀJ. 4, 1. P. 5, 2, 52. 4, 3, 112. नानाजातीया अनियतवृत्तयो ऽर्थकामप्रधानाः संघाः पूगाः Schol. एतत्पूगो वै रुद्रस्तेनं स्वेन पूगेन समर्थयति ÇĀKH. Br. 16, 7. यात्रयति च ये पूगान् M. 3, 151. JĀG. 2, 30. 211. MBh. 1, 2883. सप्त ज्ञान पूगान्दितेः सुतानाम् ARG. 1, 7. वैर Feindschaft mit Vielen MBh. 5, 1085. 1224. राजं 1, 2702. सर्वदशार्कपूगैः 3, 769. श्रुतिं 13, 6311. पत्तिं 5, 660. बर्हिणं R. 2, 35, 33. अन्नं MBh. 3, 1357. अन्नं ARG. 3, 32. HARIV. 12747. BHĀG. P. 3, 13, 35. वर्षं *Regenmenge* 17, 26. तीर्थं ÇIVA-P. in Verz. d. Oxf. H. 63, a, 3. भोगपूगाः Spr. 376. अर्थम् BHĀG. P. 1, 17, 32. गुणं ÇĪ. 9, 64. पापं KĀKH. 26, 108 (AUFRECHT, HALĀJ.). अनर्थं Schol. zu MUND. Up. S. 261. वर्षं *eine Reihe von Jahren* MBh. 1, 3606. 5, 773. 13, 6704. R. GORR. 1, 49, 30. BHĀG. P. 3, 23, 44. कालपूगम् मरुतः *nach Ablauf einer langen Zeit* (man streiche hiernach oben den Artikel कालपूग) MBh. 2, 1329. द्वादशपूगो (?) सरितम् 5, 1730. Ueber den Unterschied zwischen पूग, श्रेणि und कुल s. COLLEBR. in Trans. R. A. S. II, 167. 177. fg. पूग mit कृतादि componirt gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2, 1, 59. पूगकृतं 6, 2, 46, Sch. Vgl. पुञ्ज. — 2) m. *Betelpalme, Areca Catechu Lin.*; n. *die Betelnuss* AK. 2, 4, 5, 34. 3, 4, 2, 21. H. 1154. H. an. MED. HALĀJ. 2, 45. वेलातेनैव फलवत्पूगमालिना RAGH. 4, 44. 13, 17. BHĀG. P. 4, 6, 17. 9, 11, 28. ०पोत 4, 9, 54. 21, 3. ताम्बूलवल्लीपरिपाङ्कपूगामु — मलयस्थलीषु RAGH. 6, 64. ०फल TRIK. 3, 3, 56. VARĀH. BRH. S. 76, 41. 86, 2. SUÇR. 1, 144, 18. 143, 1. 161, 9. 166, 15. 213, 4. 228, 21. सचूर्णपूगैः सहितं पत्रं ताम्बूलजम् । मुखवैशद्यसौगन्ध्यकात्सितौष्ठवकारकम् 2, 137, 11. HIT. 113, 3. ताम्बूलोदलपूगपूरितमुखाः BHARTY. 1, 48. KAURAP. 9. ०खण्ड RĀGA-TAR. 4, 429. Auch पूगोफल Ind. St. 5. 299. SUÇR. 2, 103, 16. Nach ÇABDAR. im ÇKDR. ist पूग m. auch = काण्डनिवृत्त. Vgl. राजपूग. — 3) m. = कृन्द oder कृन्दम् ÇABDAR. — 4) m. = भाव ebend.

पूगतिर्थं adj. von पूग 1. P. 5, 2, 52. VOP. 7, 42. — Vgl. गणतिय, बहूतिय, संघतिय.

पूगपात्र (पूग 2. + पात्र) n. = फरुवक HĀR. 137. *Betelbüchse* WILS. = पूगीठ, vulg. पिकदानी Spucknapf ÇKDR.

पूगीठ (पूग 2. + पीठ) n. *Spucknapf* TRIK. 2, 6, 42.

पूगपुष्पिका (von पूग 2. + पुष्प) f. *Betel und Blumen, die man Hoch-*

zettsgüsten reicht, TRIK. 2, 7, 30.

पूरोट m. = कित्तल *Phoenix paludosa* ÇKDR. u. WILS. nach TRIK. 2, 4, 42, wo aber die gedr. Ausg. पूवोट liest.

पूवोट s. u. पूरोट.

पूय adj. von पूग 1. gaṇa दिगादि zu P. 4, 3, 54. am Ende eines comp. zur Schaar des — gehörig gaṇa वर्ग्यादि zu 6, 2, 131.

पू, पूनयति (in gebundener Rede auch med.) NAIGH. 3, 14. DHĀRUP. 32, 100. अपूजम् MBh. 3, 1005. प्रपूजिरे 6, 3790. *Ehrfurcht bezeigen, ehren, mit Achtung behandeln, mit Ehren empfangen* (Götter, Menschen und leblose Dinge): प्रगृह्य पाणी देवान्पूजयति Nir. 2, 26. 3, 4. देवान्पीन्मनुष्याश्च पितृन्गृह्याश्च देवताः । पूजयित्वा M. 3, 117. पत्रैर्न पूजयिष्यतो भवति तत्र वसेत् ऀ. G. 4, 5. MBh. 1, 6038. यथाहं पूज्य नृपतीन् 2, 1604. 3, 2332. SUND. 4, 21. R. 1, 38, 9. Spr. 1420. 2195. अपूजयत माम् MBh. 3, 11947. 5, 1560. 13, 2043. HARIV. 10972. R. 3, 18, 33. Spr. 1415. 1420, v. l. 1421. BHĀG. P. 4, 24, 70. देवतानि च सर्वाणि पूज्यन्ते भूरिदक्षिणम् MBh. 5, 7468. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते M. 3, 56. 7, 38. P. 2, 1, 61. fg. Spr. 964. BHĀTT. 3, 56. वेदविद्यात्रतज्ञानान् — पूजयेद्भ्यक्चयेन M. 4, 31. पूजयति स्म तं नृपम् । पूजाभिः स्वागताद्याभिरामनेनेदकेन || MBh. 5, 6038. 7001. 7545. R. 1, 2, 28. 3, 32, 50. BHĀG. beim Schol. zu ÇĀK. 16. 10. fg. VET. in LA. 13, 18. BHĀTT. 2, 26. अपूजयत संकृष्टा वाग्भिः शास्त्रम् MBh. 1, 4117. MĀRK. P. 29, 41. रत्नैश्च पूजयेदेनम् so v. a. *beschenken* M. 7, 203. वस्त्रमाल्यादिभिः IRIH. bei SĀJ. zu RV. 4, 123, 1. पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन् M. 2, 54. fg. ARG. 7, 23. यो हि यस्मिन्नतो धर्मे स तं पूजयति सदा MBh. 14, 1362. वाञ्छन्तुः पूजयति नो und nicht auf Rede und Blick achtet, Rücksicht nimmt JĀG. 2, 14. पूजितं geehrt, mit Ehren empfangen, in Ehren stehend AK. 3, 2, 17. H. 446. HALĀJ. 2, 229. M. 10, 72. MBh. 3, 2115. 2117. नूनं न पूजितो ऽस्माभिर्मणिभद्रः 2553. 5, 7518. N. 9, 36. 13, 8. 21, 21. R. 1, 1, 57. 84. दिष्टा मे पूजितं कुलम् 69, 11. BHĀTT. 4, 1. अग्रि-रत्र न पूजितः SUÇR. 2, 60, 8. अशनम् M. 2, 55. अखिलराजकपूजिताङ्घ्रिः VID. 337. राज्ञो पूजितः bei Fürsten in Ehren stehend P. 2, 2, 12. 3, 67. 3, 2, 188. VOP. 26, 131. मन्त्रिणो मन्त्रपूजिताः in Ehren stehend wegen R. 2, 113, 2. आश्रमो दिव्यसंकाशः सुरैरपि सुपूजितः 1, 48, 14. चेत्यो भवति निर्जाति-रर्चनीयः सुपूजितः MBh. 1, 5914. वागेया ब्रह्मपूजिता in Ehren stehend bei M. 8, 81. तां पुरीं देवगन्धर्वपूजिताम् so v. a. *bewohnt* ARG. 4, 55. *geschätzt, empfohlen* (von einem Heilmittel) SUÇR. 2, 420, 6. तथैव ननत्रपू-जिते MBh. 1, 5320. वाक्येन पूजितश्रमः so v. a. *anerkannt* Spr. 3174. सर्व-लक्षणं so v. a. *versehen mit* MBh. 1, 1096. 5903. R. 2, 26, 16. पात्रैरर्घ्या-दिपूजितैः (Schol. = पुक्त) 1, 73, 21.

— अनु *der Reihe nach ehren* R. GORR. 2, 99, 9.

— अभि *Jmd ehrenvoll empfangen*, — *begrüssen, ehren, beloben* N. 3, 16. MBh. 1, 6039. 4, 345. R. 1, 1, 83. KATHĀS. 43, 229. कृताशनस्त्वमिति सदाभिपूज्यते MĀRK. P. 99, 65. VARĀH. BRH. S. 42 (43), 67. हेमवस्त्राद्यैः so v. a. *beschenken* KATHĀS. 31, 59. अभिपूजित Nir. 3, 21. P. 8, 2, 100. R. 1, 9, 70. R. GORR. 1, 10, 18. तैश्च सूर्या ऽभिपूजितः 4, 43, 47. BHĀG. P. 4, 25, 1. साधुवादाभिपूजित KATHĀS. 43, 126. *Etwas beloben*: रत्नं चात्मनः संख्ये शत्रवो ऽप्यभ्यपूजयन् MBh. 1, 4106. तद्योत भरतो वाक्यं वसिष्ठस्याभिपूज्य तत् R. 2, 76, 12. श्रुत्वा यदभिपूजितम् (पुराणम्) MBh. 1, 17. अभिपूजितत्ताभ M. 6, 58. यस्य यस्य ययाकामं षड्रसेभभिपूजितम् so v. a. *erwünscht, ge-*